Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Peer Reviewed, Refereed)

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

Book Review 2

संघर्षमय जीवन का यथार्थः संघर्ष के साथ–साथ

Reviewed by: अनिल कुमार पाण्डेय

लेखक : डॉ. विनोद कुमार

प्रकाशक : दिल्ली पुस्तक सदन
संस्करण : 2018 मूल्य : 295 (सजिल्द)

जीवन के व्यावहारिक धरातल पर डॉ. विनोद कुमार अपनी संघर्षधर्मी प्रवृत्ति की वजह से जाने जाते हैंद्य यही वजह है कि दिल्ली पुस्तक सदन द्वारा प्रकाशित उनकी 'संघर्ष के साथ–साथ' कविता संग्रह में संघर्षमय जीवन का यथार्थ देखने को मिलता है। जब विनोद कुमार कहते हैं कि "हमने संघर्ष के साथ–साथ चलते हुए चिराग देखे हैं कई तूफां में जलते हुए" तो कहीं न कहीं संघर्ष की जमीन पर व्यावहारिकता की तलाश कर रहे होते हैं। यहाँ उन्हें आदर्श, नैतिकता, प्रेम और सौंदर्य की उपस्थिति में यथार्थ का भयावह परिदृश्य सोचने के लिए विवश करता है। विवशता की स्थिति में देश–समाज से कहने और जानने की इच्छा प्रबल होने लगती है। अब जब वे इस संग्रह के माध्यम से कलम हाथ लिए उपस्थित हुए हैं तो यह दावा करना गलत नहीं है कि "काम चल पायेगा बिन दिए न जवाब प्रश्न मेरे अभी शेष हैं कुछ सुलगते हुए "सुलगते सवाल वहीं वजूद में होते हैं जहाँ ईमानदारी होती है।

कवि की नजरों में ईमानदारी आज भी आम जनमानस में है। गरीब, मजदूर, मिलों और फैक्टरियों में दिन–रात खटने वाले साधारण जन–मानस ईमानदार ही तो है। किसानों की ईमानदारी पर क्या शक किया जा सकता है? यह उनकी ईमानदारी का ही परिणाम है कि कवि–हृदय में ये प्रश्न स्थाई बन कर विचरण करता है कि "उत्तम खेती माध्यम बान निषिद्ध चाकरी भीख समान क्या होगा सच कभी ये गानध लहलहाएंगे खेत और खलिहान" क्योंकि जैसे–जैसे समय बढ़ रहा है इनके अधिकार मल्टीनेशनल कम्पनियों के हाथों सौंप दिए जा रहे हैं कृषि पर निर्भरता खतम हो रही है उधर की तरफ शायद ही कोई रुख करना उचित समझ रहा हो। रोजगार की घटती संख्या इन्हें गलत दिशा की तरफ ले जा रही है।

कहने को हम अपने बनाए तंत्र में हैं लेकिन यथार्थ में हमारे आवाज को कुंद करने का शाजिश रचा जा रहा है। हमें न बोलने के लिए विवश किया जा रहा है। कवि इस

सहायक प्राध्यापक, हिंदी–विभाग, समाज विज्ञान एवं भाषा संकाय
लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, पंजाब। मो–8528833317

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

विवशता को स्वीकार नहीं करताद्य कवि के पास कलम है इसलिए वह प्रतिरोध की संस्कृति पर विश्वास रखता है। वह स्पष्ट कहता है कि "भारत के इस प्रजातंत्र में। जन–गण का यह कहना है। बहुत हो चुका दमन चक्र, अब हमको नहीं सहना है, नई पटकथा लिख देंगे हम, दीवारों पर खून से, मुक्त करो मानव को अब तो, पशुओं सी इस जून से, शंखमुखी शिखरों पर चढ़, मिट्टी का चेहरा चमकेगा, बची हुई पृथ्वी पर, अपने खेत में सोना चमकेगाद्य" श्रम ही वह कुंजी है जो हमारे परिवेश को समृद्धि का खजाना दे सकती है। कलम वह ताकत है जो उस कुंजी और खजाने की आवश्यकता को समझने का अवसर दे सकती है। कवि इसीलिए अपनी एक कविता में कहता है कि "आदर्श परंपरा उजड़े न, मिलकर ये अहसास करें, है कलम हमारे हाथ में, हम भी कुछ प्रयास करें।" यह अक्सर कुछ लोगों द्वारा कहा जाता है कि एकमात्र हमारे प्रयासों से दुनिया कैसे सुधर जायेगी? लेकिन कवि का विश्वास है समस्याओं के धुंध साहस को शक्ति के साथ रखने से ही छटेंगे।

इन तमाम सुलगते सवालों में से एक सवाल ये भी है कि "अमन की बात पर इतने, हैं सवालात क्यों आखिर, शान्ति वार्ता के बावजूद, ये हालात क्यों आखिर" ये सवाल आज के यथार्थ परिदृश्य में सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल इसलिए है क्योंकि शांति के नाम पर दिन–ब–दिन बैठकें करने वाले लोग अशांति के सबसे बड़े कारण बन रहे हैं, आतंक के साए में जीने वाले लोगों की रखवाली करने वाले सैनिक मौत के घाट उतारे जा रहे हैं और हमारे नीति–नियंता हैं कि उन्हें वोट की राजनीति से ही फुर्सत नहीं मिल रही है। ऐसे गैरजिम्मेदार लोगों से विनोद का यह पूछना भी जरूरी है कि "देख हद सब्र की होती। नहीं आश्चर्यानुभूति क्या, उमड़ती दिल में कोई भी, नहीं प्रश्नानुभूति क्या"

विनोद कुमार एकाकीपन से कहीं अधिक कारगर सामूहिक स्वर को मानते हैं। यह सच है कि वर्तमान समय की एक बड़ी समस्या सांप्रदायिक विद्वेष की भावना है, जो हमें सामूहिकता और सामाजिकता निर्वहन से दूर रख रही है। हिन्दू–मुस्लिम के बीच जो वैमनस्यता कभी मध्यकाल में थी उससे कम विकराल रूप में आज नहीं है। हम एक–दूसरे को अपराधी मान बैठे हैं। बनिस्बत इसके कि अपराध के कारणों की खोज करें। कारणों की खोज सम्वाद को जारी रखने से होगाद्य एक स्थान पर बैठने और साथ–साथ चलने से होगा। जो पीछे हैं उन्हें आगे और जो आगे हैं उन्हें साथ लेने से होगा। कवि के अनुसार कहें तो "आगे आना होगा स्वयं, पहले हाथ बढ़ाना होगा, जिनको पराया मान के बैठे, उनको गले लगाना होगा, ईद बराबर मिलकर बोलें, साथ मनाएँ दीवाली, शांति व्याप्त हो जाए विश्व में, और बढ़ेगी खुशहाली।" कवि स्पष्टतः यह मानता है कि पारस्परिक परम्पराओं, रीतियों की अनुपालना करने से हम समृद्ध होंगे न कि उनका विरोध करने से। यह स्वाभाविक है कि कवि अपने वैयक्तिक जीवन में इसी प्रकार के प्रयास करता रहता है जैसा इस रचना में अभिव्यक्त किया है "एक उम्र से है मुझको, यही एक इंतजार, जाने कब

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

जागेंगे स्वयंभू, देश के पहरेदार, हंसी खुशी और प्यार रहे बस, मिटेगी जिस दिन आह! अधिकार मिले मानव को उस दिन, पूरी होगी मेरी चाह।"

रोज–मर्रा की जिंदगी से बची–बचाई सम्वेदना को शब्द–रूप में ढालने का जो हुनर आप इस कविता संग्रह में पायेंगे वह स्वयं में विरल है। जन और जीवन के बीच खाली पड़े स्पेस को भरने में यह संग्रह जिस गहराई के साथ सक्रियता बनाने में कामयाब है...देखते बनता हैद्यइस संग्रह को पढ़ते हुए यह भी देखने को मिलता है कि कविता–सृजन के लिए कवि हाथ–पैर चलाते परेशान नहीं दिखाई देता अपितु परिवेशगत विशिष्टताओं के दायरे में कविताएँ स्वयं साकार रूप लेने लगती हैं। पाठक जब इन कविताओं को पढ़ रहा होता है, न तो अर्थ प्राप्ति के लिए कल्पना के विरल लोक में जाने की आवश्यकता होती है और न ही तो यथार्थ के सड़ांध में नाक डुबोने की जरूरत...यह जरूर आभास होता है कि इसमें शामिल विषय ही हमारे जीवन और समय का सच हैद्य साहित्य के सच के साथ ठहरना ही पाठकीय ईमानदारी है और यही कवि एवं कविता के प्रयासों की सार्थकता है, विनोद की कविताएँ "न ईश्वर की भक्ति है और न थोथी अभिव्याक्ति है, समकालीन व्यवस्था में अवमूल्य विभंजक शक्ति है।" इसी शक्ति को साकार करने के लिए कवि अनथक सृजनरत रहता है।